व्यंग्य - व्यंजक सम्बन्ध मानते हैं। विभावादि के संयोग से व्यंजना नाम की एक अलौकिक क्रिया उत्पन्न होती है। इस क्रिया की एक उपक्रिया होती है, जिसे वे विभावन व्यापार कहते हैं। इस विभावन व्यापार के द्वारा काव्यार्थ साधारीकरण होता है और इस स्थिति में विभावादि ममत्व-परत्व की भावना से ऊपर उठ जाते हैं। आचार्य मम्मट ने साधारीकरण की अवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है कि साधारणीकृत विभावादि के संबंध में मेरे हैं या शत्रु के हैं अथवा उदासीन के हैं, ऐसी सम्बन्ध स्वीकृति रहती है और मेरे नहीं हैं या शत्रु के नहीं हैं या उदासीन के नहीं, ऐसी सम्बन्ध की अस्वीकृति रहती है।

डॉ० गुलाबराय अभिनवगुप्त के साधारणीकरण का अर्थ — "सम्बन्धों का साधारीकरण मानते हैं। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने विभावादि के साधारणीकरण के साथ-साथ पाठक का आश्रय के साथ तादात्म्य भी आवश्यक माना है। जो सीता आदि आलम्बन विभाव, उद्दीपन विभाव काव्यादि में निबद्ध होते हैं। वे काव्यानुशीलन तथा नाटक दर्शन के समय श्रोता और द्रष्टाओं के साथ अपने को सम्बद्ध रूप से ही प्रकाशित करते हैं, यही साधारीकरण है। इनके मतानुसार सहृदय का आश्रय के साथ तादात्म्य कि आवश्यक है और आलम्बन, आश्रय और पाठक आदि का साधारीकरण होता है।

पण्डित जगन्नाथ के मतानुसार सहृदय सामाजिक के मन में रंगमंचीय सम्पर्क से दोष उत्पन्न हो जाता है जिससे रागादि के साथ वह रसमग्न हो जाता है।

डॉ० श्यामसुन्दर दास पर आचार्य केशवप्रसाद मिश्र की धारणा का प्रभाव दिखाई देता है। आचार्य मिश्र ने साधारीकरण का संबंध योग की 'मधुमती भूमिका' से जोड़ा है। डॉक्टर श्यामसुन्दर दास के मत में पर-प्रत्यक्ष का दूसरा नाम ही योग की मधुमती भूमिका है। पर-प्रत्यक्ष उसे कहते हैं जहाँ वितर्क की

की भावना नहीं रहती। शब्द, अर्थ तथा ज्ञान की प्रतीति भिन्न-भिन्न नहीं होती। मधुमती भूमिका योग की जिस दशा का नाम है, साहित्य में रस की इसी दशा का नाम साधारीकरण है। कवि और पाठक की चित्तवृत्तियों का एकतान-एकलय हो जाना ही साधारीकरण है। किसी काव्य या नाटक के साथ जब पाठक या दर्शक इतने तन्मय हो जाते हैं कि वे काव्यभावना के अनुकूल व्यवहार करते हैं इसी दशा का नाम साधारीकरण है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं- "जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता कि वह सामान्यतः सबके उसी भाव का आलम्बन हो सके, तब तक उसमें रसोद्बोधन की पूर्ण शक्ति नहीं आती। इसी रूप में लाया जाना हमारे यहाँ साधारीकरण कहलाता है।" शुक्ल जी के अनुसार वर्णित भाव विशिष्ट व्यक्ति के माध्यम से आने पर भी लोक-सामान्य होना चाहिए, जिससे सामाजिक उसे सरलता से ग्रहण करके उसका आनन्द ले सके। शुक्ल जी ने लिखा है- "व्यक्ति तो विशेष ही रहता है, पर उसमें प्रतिष्ठा ऐसे सामान्य धर्म की रहती है, जिसके साक्षात्कार से सब श्रोताओं तथा पाठकों के मन में एक ही भाव का उदय थोड़ा या बहुत होता है।" श्यामसुन्दर दास और शुक्ल जी के साधारीकरण में अन्तर यह है कि डॉ० दास का साधारीकरण कवि या भावुक की चित्तवृत्ति से सम्बद्ध है, जबकि शुक्ल जी का विभाव (आलम्बन) से, जो सबका आश्रय बन सके। डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित और डॉ० रघुवंश जी ने शुक्ल जी के विचारधारा का समर्थन किया है।

आधुनिक युग के प्रसिद्ध आलोचक डॉ० नगेन्द्र ने साधारीकरण का प्राच्य एवं पाश्चात्य आलोचना शास्त्र का अध्ययन कर गम्भीर विवेचन किया है। उन्होंने शुक्ल जी के मत का खंडन किया है।

हृदय स्थिति, वासनात्मक रति आदि स्थायीभावों से रस-निष्पत्ति स्वीकार की है। यह रस सहृदय सामाजिक को ही आस्वाद्य है।

अधिकांश आधुनिक काव्यशास्त्री रस-निष्पत्ति के प्रसंग में अभिनवगुप्त की मान्यताओं से सहमत हैं।

साधारीकरण —

आचार्य भट्टनायक तीन व्यापारों के माध्यम से रसनिष्पत्ति का विवेचन प्रस्तुत किया है। उन्होंने अभिधावृत्ति के अतिरिक्त 'भावकत्व' और 'भोजकत्व' नामक अन्य दो व्यापारों की कल्पना की है। 'भावकत्व' से रस का और 'भोजकत्व' से सहृदय का सम्बन्ध स्वीकार किया गया है। 'भावकत्व' की व्याख्या करते हुए काव्यप्रकाश के टीकाकार गोविन्द ठक्कुर ने लिखा है कि — "भावकत्व साधारीकरण है। इस व्यापार के द्वारा स्थायीभाव तथा विभावादि का साधारीकरण होता है।" साधारीकरण से इनका आशय यह है — राम सीतादि इस व्यापार से मनुष्य और नारी सामान्य के रुप में उपस्थित होते हैं। भट्टनायक के मतानुसार शकुन्तलादि आलम्बन, उद्यानादि उद्दीपन, आलिंगनादि अनुभव तथा शंका, हर्ष आदि संचारी भाव अपने विशिष्ट स्वरुप का परित्याग कर सामान्य या साधारणीकृत रुप में प्रकट होते हैं। विभावादि यह साधारणीकरण 'भावकत्व' व्यापार में होता है।

अभिनवगुप्त का मत इनसे कुछ भिन्न है, अन्तर यह है कि वह भट्टनायक के द्वारा स्वीकृत भावकत्व एवं भोजकत्व नामक व्यापारों की कल्पना को अनावश्यक मानते हैं। इनका कहना है कि इन दोनों ही काव्य व्यापारों का कार्य सर्वमान्य व्यंजनावृत्ति से ही चल जाता है। वैसे अभिनवगुप्त ने भट्टनायक के विचारों की पृष्ठभूमि में ही अपने विचार व्यक्त किए हैं। अभिनवगुप्त स्थायीभाव एवं विभावादि में

Scanned with CamScanner

डॉ० नगेन्द्र कहते हैं - " साधारीकरण का अर्थ है: कवि की अनुभूति का साधारीकरण। कवि अपनी अनुभूति के साथ अपना रस भी सहृदय के पास भेजता है। अतः रस की स्थिति ~~सहृदय~~ कवि के हृदय में मानना इतना ही अनिवार्य है जितना सहृदय के हृदय में मानना।... सहृदय को जो रसास्वादन होता है, उसकी मूलस्थिति उसी के हृदय में है अर्थात मूलतः वह उसी की अस्मिता का आस्वादन है।" काव्य प्रसंग, ~~और~~ कवि - भावना का ~~को~~ ~~प्रकाशित~~ ~~करते~~ बिम्ब-मात्र है। यह काव्य प्रसंग और कवि - भावना उसको प्रकाशित करने वाली चैतन्य आत्मा है और साधारीकरण भी एक चैतन्य क्रिया है अतः कवि भावना का साधारीकरण मानना मनोविज्ञान के अधिक अनुकूल है।

किन्तु साहित्य में जब स्थायीभाव के आश्रय की स्थिति समस्त अवस्थाओं में अनिवार्य नहीं मानी जाती, वहाँ आलम्बन अथवा विभाव पक्ष की सत्ता अनिवार्य होती है। किसी वस्तु या विषय को आलम्बन अथवा विभाव कहने से कवि द्वारा अनुभूति भाव का ही आलम्बन अथवा विभाव होता है। रस के समस्त अवयवों का साधारीकरण अथवा कवि - भावना का साधारीकरण भिन्न बातें नहीं हैं। ~~किन्तु~~

निष्कर्षतः नाट्य या काव्य के समस्त कार्य - व्यापार का ही साधारीकरण होता है।